अपने व दूसरों के सब संकल्प को लॉकअप कर ,बाप को याद करना
अमृतवेले उठ बाप से मीठी -मीठी रुहरिहान करना
दही-अभिमानी ही अर्थ सहित बोल सकता
देह-अभिमान के बोल अर्थ का अनर्थ बना देता
ड्रामा कहकर पुरुषार्थहीन नही होना
अपनी भविष्य कमाई पुरुषार्थ से ही ज़मा करना
साफ़ दिल बन बाप की याद से हिसाब -किताब चुक्तू करना
संपूर्ण पवित्र जीवन बनाना माना माया प्रूफ बनना
पर-वृति में रहना है असम्भव को संभव बनाना
देह और देह की दुनिया से बनना न्यारा
अटेंशन का पहरा, अती इंद्रिय सुख को खोने नही देता

ॐ शांति
मेरा बाबा